भील बस्ती का बाल मेला

''अंकुर'' समूह

कुछ दिन पहले की बात है। भील बस्ती में एक मेला लगा—''बच्चों का मेला''। एक ऐसा मेला जहां बच्चे अपनी खुशी और जोश के साथ सुंदर-सुंदर चीज़े बनाते हुए, कुछ सीखते भी गए। पतंग, फिरकी, मुखौटे, मिट्टी के खिलौने, रद्दी कागज के खिलौने, बुक-बाइंडिंग, चित्रकारी, गीत, इत्यादि बहुत से तरीकों के ज़रिए बच्चे अपनी-अपनी प्रतिभा को उभारते गए।

प्रोग्राम बनाया—हम सबने मिलकर—''सार'' समूह के सदस्य, ''अंकुर'' के कार्यकर्ता और सी.सी.आर.टी. के सात कलाकार। मकसद था ऐसे बच्चों के साथ एक कला-मेला करना जिन्हें मौके नहीं मिल पाते, साथ ही ऐसी क्रियाएं कराना, जो उनके माहौल से जुड़ती हों और जिसमें ऐसे साधनों का इस्तेमाल हो जो सस्ते या मुफ्त के हों और आस-पास आसानी से मिल जाएं।

यह मेला एक अलग तरीके का था। बच्चे अपनी-अपनी पसंद के अनुसार, अपनी-अपनी रफ्तार के साथ अलग-अलग कलाकारों के साथ बैठ-बैठ कर चीज़े बनाते रहे। जिन चीज़ों से वे खेलते हैं या खेलना चाहते हैं, वे खुद आसानी से बना पाए।

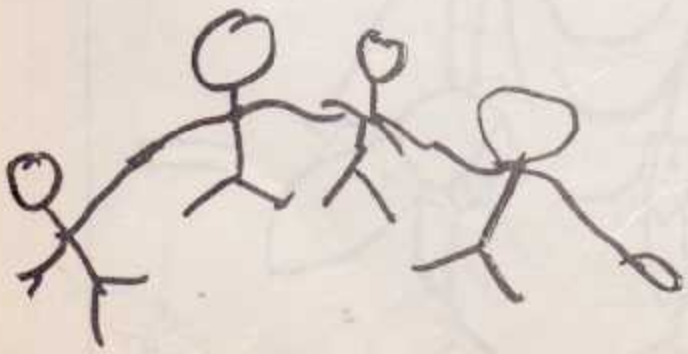

पहले दिन सार व अंकुर समूह के सदस्यों, सातों कलाकारों और बच्चों का आपसी परिचय हुआ। फिर ''नन्हें'' कलाकार अपने बड़े साथियों के साथ, उम्र व रुचि अनुसार ग्रुप बनाकर भील-बस्ती के सात घरों के आंगनों में बैठ गए। रंग-बिरंगी कनातें, ऊपर लहराती झंडियां, खुला आकाश और नीचे—बच्चे पतंगें, मुखौटे, खिलौने, चिड़ियां, फिरकनी, सांप, बतख, फिरकी बना रहे थे। बाइंडिंग का काम कर रहे थे। तीन दिन तक यह रंगीन माहौल बरकरार रहा। शुरू में बच्चों की संख्या 60-70 थी जो बाद में 120-130 तक पहुंच गई।

बच्चों का उत्साह व चुस्ती तो देखते ही बनती थी। वे घूम-घूम कर अपनी चीज़ें एक-दूसरे को, कलाकारों को और शिक्षिकाओं को दिखाते—''हमने तो चिड़ियां बनाई।'' ''मेरी पतंग तो बहुत ऊंची उड़ेगी।'' ''ये मेरी रसोई के बर्तन हैं।'' ''किसान'' व ''धनी राम'' अंगुली पर चढ़कर सबसे बातें करता रहा। जब एक चीज़ बनाना सीख लेते थे तो भागकर दूसरे ग्रुप में बैठ जाते थे। बच्चे बहुत जल्दी सीख रहे थे। अपनी इच्छा और कल्पना की उड़ान भरने में व्यस्त थे। शिक्षिकाओं व कलाकारों—दोनों से ही बच्चों की बहुत बढ़िया दोस्ती हो गई।

कार्यकर्ताओं ने भी लगन व उत्साह से इस वर्कशाप में भाग लिया। बच्चो पर ध्यान देना, उन्हें और कलाकारों को मदद देना—यह काम बखूबी निभाया। कभी-कभी शिक्षिकाएं कलाकार से कला के विषय में, उसके इस्तेमाल के बारे में इतने सारे सवाल करने लग जातीं थीं कि उनके कान में जाकर कहना पड़ता—"वर्कशाप बच्चों के लिए भी है।"

सभी कलाकारों ने लगन, प्यार व धीरज से बच्चों को सिखाने में मदद दी। बच्चों से उनकी बनाई चीज़ों पर बातचीत की, उन्हे प्रोत्साहन दिया। शिक्षिकाओं के सवालों का भी जवाब देते रहे, यह कह कर कि "आपका अच्छी तरह सीखना भी ज़रूरी है ताकि आप खुद इस काम को बच्चों के साथ करते रहें।"

बच्चों की मांएं कभी-कभी आंगन में जाकर उनके साथ बैठ कर काम देखतीं। कभी कनात के सहारे खड़ी हो रोचकता व उत्सुकता से भरपूर कलाकारों, शिक्षिकाओं और बच्चों को देखतीं। बस्ती की महिलाओं ने, युवक ग्रुप के लड़कों व पुरूषों, सभी ने हर दिन सहयोग दिया—पानी की व्यवस्था करने में, आंगन को साफ करने में, झंडियां लगाने में। बच्चों ने जोर-शोर से सफाई की। भाग-भाग कर सामान लाए।

अंतिम दिन बच्चों के बनाए काम की एक प्रदर्शनी हुई। बच्चे अपनी बनाई चीज़ों—मुखौटों, बतख इत्यादि को लिए हुए भील बस्ती की गलियों मे घूमे और सबको प्रदर्शनी देखने का न्यौता दिया—

गोल-गोल, गोल-गोल एक पैसा
हमारे गाने का ढंग ऐसा
आओ देखो पहाड़ी पर
बच्चों ने किया कमाल कैसा।।
मुखौटा बनाया, सांप बनाया
सिपाही बनाया
ढोल भी बनाया।।
नीली गुलाबी पतंगें बनाई
ऐसी भी एक पतंग बनाई
बरखा में भीगी
फिर भी उड़ाई।।
रद्दी को होली के
रंग से रंगाया
उससे भी चिड़ियां
कबूतर बनाया।।
गोबर्धन ने शेर का
मुखौटा लगाया
ईसर ने रावण सा
चेहरा बनाया।।

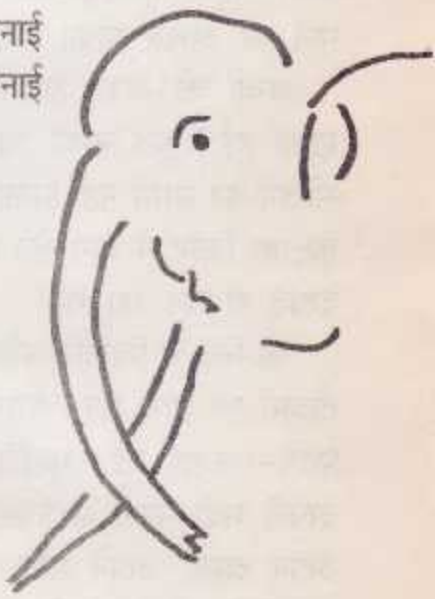

एक कलाकार ने ढोल बजाकर इस झुंड का साथ दिया।

ज्यादातर बच्चों की मांएं आईं। उन्हें लगा कि बच्चों ने बहुत बढ़िया काम किया है और इस तरह के मौके उन्हें और भी मिलने चाहिएं।

बच्चों के माता-पिता से जुड़ाव बढ़ा। बच्चों की अपनी बनाई चीज़ों को देखकर माता-पिता भी कहने लगे—"अरे तुम यह भी कर सकते हो। हम तो समझते थे कि तुम्हें शरारतों के सिवाय कुछ नहीं आता।" क्योंकि यह कार्यक्रम माता-पिता के सामने ही हो रहा था उनसे बात करने का, उनकी राय जानने का व उनका सहयोग पाने का अच्छा मौका मिला।

बच्चों को अपने हाथ से चीज़े बनाने में बड़ी खुशी हुई। कुछ बच्चों को लगा, दूसरी चीज़ें सीखने का समय नहीं मिला। सब कुछ सीख लेने का, हर क्रिया में भाग लेने का उनका उतावलापन देखते ही बन रहा था।

जो चित्र व खिलौने बने वो घर पर सज गए, दीवारों पर टांगे गए। पतंगे—अपनी बनाई पतंगें—उड़ाई गईं। मुखौटे लगा-लगा घूमे। अपनी मढ़ी कापी में लिखने लगे। कुछ चीज़ें अपने दोस्तों, अपने छोटे भाई-बहनों को दीं।

बच्चों और बड़ों में खूब बातें हुईं—"पतंग कैसे बनाई", "ये प्लास्टिक की पतंग कैसे उड़ेगी", "ये सिपाही क्या करेगा," "क्या लड़ना-मारना चाहिए" इत्यादि। हाथी के मुखौटे, मिट्टी की बिल्ली और अन्य कठपुतलियों के ज़रिए बच्चों ने कहानी बनाई, गीत सुनाए और बातचीत की। बच्चों की झिझक खुली, हाथ खुले, उन्होंने खूब मजा किया अपनी "बिल्ली" की तरहः—

मेरी बिल्ली
प्यारी काली
आई घूमने
मेले पाली
घूम-घूम कर
मजा लगाई
अपना भी
सबका दिल बहलाई।
मोर भइया से
लगन लगाई
कबूतर कका से
यारी लगाई
सिपाही भइया की
बन्दूक फेंकाई
घर-घर जाकर
प्यार जताई।

बड़ों के लिए उनका बचपन लौट आया, कुछ समय के लिए। कुल मिलाकर भील बस्ती में बसन्त आ गया था।

एक थी चिड़िया एक था हाथी
दोनों बहुत थे अच्छे साथी
मैंने बिल्ली पाली थी
बिल्ली बोली म्याऊं-म्याऊं। □